कुंजी

DATE 18.7.24
PAGE No. 1

टेंडर हार्ट हाई स्कूल, सेक्टर - 33 - बी, चण्डीगढ़

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी) कहानी

पुस्तक - नवतरंग भाग - 8 पाठ बोध

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- संक्षेप में

उत्तर(क) मलिक कांफूर एक गुलाम था, जो यवन-सेना का अधिपति था। वह जैसलमेर दुर्ग के गुप्त द्वार से किले के अंदर घुसना चाहता था। इसके लिए उसने एक वृद्ध राजपूत सैनिक को घूस देकर रात में दुर्ग का द्वार खोल देने को कहा। रात के समय जब वह अपने चुने हुए योद्धाओं के साथ गुप्त मार्ग से दुर्ग के अंदर पहुँच गया तब वृद्ध द्वारपाल ने राजकुमारी की योजना के अनुसार द्वार को बंद कर दिया और स्वयं गायब हो गया। अब मलिक काफूर और उसके योद्धा न आगे जा सकते थे और न ही वापस लौटकर जा सकते थे। उन्हें बंदी बनाया जा चुका था। इस प्रकार राजकुमारी ने दुश्मन को बंदी बनाया।

उत्तर(ख) अलाउद्दीन की सेना ने किले को चारों ओर से घेर लिया था। दुश्मन ने सोचा कि कुछ समय पश्चात दुर्ग के भीतर खाद्य-सामग्री समाप्त हो जाएगी तब राजकुमारी विवश होकर किले को हमें सौंप देगी। लेकिन ऐसा न हुआ। राजकुमारी ने अलाउद्दीन के साथ उसके सेनापति को बंदी बनाकर ऐसी चाल चली कि किले में कई महीने की खाद्य-सामग्री इकट्ठा कर ली और निश्चिंत हो गई। जब अलाउद्दीन को अपने गुप्तचर से यह सूचना मिली कि किले में किसी तरह से रसद पहुँच गई है। किला नौ महीने और पड़ा रहने पर भी हाथ न आएगा। उसने यह भी बताया कि शाही फौज के लिए अब किसी तालाब में पानी नहीं रह गया है और

Scanned with CamScanner

कुंजी

DATE 18.7.24
PAGE No. 2

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 6 जैसलमेर की राजकुमारी)

महाराव रत्नसिंह ने शाही सेना को मालवे तक खदेड़ दिया है। इन सब हालातों को देखते हुए ही अलाउद्दीन महाराव से संधि करने के लिए तैयार हो गया।

उत्तर(ग) अलाउद्दीन द्वारा हथियार डालने के बाद जब उसने महाराव से संधि कर ली तब मलिक काफूर महाराव के निकट बैठा था। उस समय उन्होंने कहा कि मेरी गैरहाज़िरी में आपको किले में असुविधाएँ हुई होंगी। युद्ध के नियम सख्त होते हैं, लड़की अकेली थी। उससे जो बन सका किया। राजकुमारी ने जब मलिक काफूर और उसके सैनिकों को बंदी बना लिया था तब उसे अपने सैनिकों के साथ-साथ अपने शत्रु और उसकी सेना के भोजन की भी चिंता थी। राजकुमारी ने बंदी शत्रु सैनिकों और सेनापति काफूर के प्रति सद्व्यवहार और अतिथि सत्कार करके अपनी महानता साबित की। इसी कारण मलिक काफूर ने महाराज रत्नसिंह से कहा, "महाराज राजकुमारी तो पूजने लायक हैं।"

विस्तार से:- उत्तर(क) अलाउद्दीन की विशाल सेना ने टिड्डी दल की भाँति जैसलमेर के दुर्ग को घेर लिया था। इस कारण सब प्रकार की खाद्य-सामग्री बाहर से आना बंद हो गई थी। प्रतिदिन यवनदल गोली और तीरों से वर्षा करते थे, पर जैसलमेर का अजेय दुर्ग गर्व से मस्तक उठाए खड़ा था। यवन समझ गए थे कि दुर्ग पर विजय प्राप्त करना हँसी-ठट्ठा नहीं है। राजनंदिनी रत्नवती अपने दुर्ग में सुरक्षित बैठी शत्रुओं के दाँत खट्टे कर रही थी। दुश्मन किले का कुछ भी न बिगाड़ पाए।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कुंजी

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

उत्तर (ख) राजकुमारी ने यवन सेनापति मलिक काफूर से परामर्श किया कि दुर्ग के अंदर खाद्य सामग्री कम हो रही है। राजपूत भूखों मरने लगे हैं। उसे शत्रु-कैदियों की भूख की चिंता सता रही है और उसे यह कहते संकोच हो रहा है कि आपकी कैसे अतिथि-सेवा की जाए। अब कल से हम लोग एक मुट्ठी अन्न लेंगे और आप लोगों को दो मुट्ठी उस समय तक मिलेगा जब तक कि अन्न दुर्ग में रहेगा। बस, यही बात बताकर वह किले में भोजन-सामग्री मँगाकर किले को सुरक्षित कर करना चाहती थी।

उत्तर (ग) राजकुमारी रत्नवती जैसलमेर के दुर्गाधिपति महारावल रत्नसिंह की कन्या थी। वह मर्दाने वेश में, कमर पर दो तलवारें लटकाए, पीठ पर तरकस हाथ में धनुष लेकर घोड़े पर सवार थी। जब राजा रत्नसेन युद्ध के लिए प्रस्थान कर रहे थे तो उन्होंने बेटी के कंधे पर हाथ धरके कहा, "बेटी, मैं दुर्ग को तुझे सौंपकर निश्चिंत हो गया हूँ। शत्रु से सावधान रहना क्योंकि वे केवल वीर ही नहीं, धूर्त और छलिया भी हैं।" तब राजकुमारी ने अपने पिता का न केवल हौसला बढ़ाया अपितु उन्हें आश्वासन दिलाया कि आप निश्चिंत होकर युद्ध के लिए प्रस्थान करें, किले का बाल भी बाँका न होगा। राजकुमारी ने अपनी वीरता और साहस से शत्रु के दाँत खट्टे किए। यवन सेना किले की प्राचीर पर चढ़ने लगी तब अचानक उसने गर्म तेल और पत्थरों से हमला कर दुश्मन को भगा दिया। अलाउद्दीन के यवन सेनापति मलिक काफूर को बंदी बना लिया। मलिक काफूर की सहायता से दुर्ग में रसद मँगाली।

कुंजी

DATE 18.7.24
PAGE No. 4

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 जैसलमेर की राजकुमारी)

इस प्रकार युद्ध चातुर्य दिखलाकर राजकुमारी ने शाही सेना को घुटने टेकने पर विवश करदिया। इन सभी बातों से पता चलता है कि राजकुमारी रत्नवती बहुत साहसी और बहादुर स्त्री थीं।

समाप्त

अंतिम पृष्ठ-4

Scanned with CamScanner